राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर

प्रकाशन योजना

प्रदर्शनधर्मी कलाओं के सार्वदेशिक स्वरूप की अक्षुण परम्परा को आगे बढाने के लिए उनके संरक्षण, उन्नयन एवं व्यापक प्रसार हेतु तथा प्रदेश की लुप्तप्रायः कला विधाओं की सुचित जानकारी जन जन तक पहुंचाने के उद्‌देश्य से अकादमी द्वारा प्रकाशन योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत प्रदर्शनधर्मी कला क्षेत्र के प्रतिष्ठित एवं स्थापित विशेषज्ञों की सेवाएं ली जायेंगी तथा नवोदित प्रतिभाओं के रचनाकर्म को राष्ट्रीय स्तर पर परिचित करवाने का प्रयास किया जायेगा। इस योजना को तीन भागों में बांटा गया है :–

(अ) अकादमी द्वारा स्वयं का प्रकाशन

(ब) अकादमी द्वारा प्रकाशकों के सहयोग से प्रदर्शनधर्मी कलाओं से संबंधित पुस्तको का प्रकाशन

(स) अकादमी द्वरा प्रदर्शनधर्मी कलाओं से संबंधित पुस्तकों के प्रकाशन हेतु लेखकों को प्रकाशन सहयोग।

लेखको को प्रकाशन सहयोग के नियम

1.	प्रकाश्य पुस्तक प्रदर्शनधर्मी विधाओं से संबंधित होनी चाहिए, इसके अतिरिक्त प्रदर्शधर्मी कलओं पर किया गया शोधकार्य,सर्वेक्षण कार्य एवं मौलिक लेखन कार्य भी स्वीकार्य होगा।
2.	प्रकाश्य पुस्तक का लेखक राजस्थान का मूल निवासी होना चाहिए।
3.	लेखकों को पुस्तक प्रकाशन सहयोग हेतु अपनी पांडुलिपि की दो प्रतियां अकादमी को प्रस्तुत करनी होगी।
4.	प्रकाशन सहयोग हेतु प्रस्तावित सामग्री कम से कम डिमाई आकार के 80 पृष्ठों की होनी चाहिए।
5.	प्रकाशय सहयोग से प्रकाशित होने वाली पुस्तक की पचास प्रतियां अकादमी को निःशुल्क देनी होगी।
6.	प्रकाशित पुस्तक में **राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से प्रकाशित** छपवाना अनिवार्य होगा।
7.	प्रकाशित पुस्तक का कॉपीराईट लेखकाधीन रहेगा।
8.	एक बार प्रकाशन सहयोग प्राप्त करने वाला लेखक अगले दो वर्षो तक इस योजना में सम्मिलित नहीं हो सकेगा।
9.	अकादमी को प्रस्तुत पांडुलिपि में प्रकाशन के समय फेरबदल स्वीकार्य नहीं होगा।
10.	प्रकाशन सहयोग के अन्तर्गत स्वीकृत पांडुलिपि को अकादमी द्वारा चाही गई निश्चित तिथि तक छपवाना अनिवार्य होगा।
11.	अकादमी द्वारा प्रकाशन सहयोग के अन्तर्गत आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान करना उद्‌देश्य है न कि प्रकाशन का पूर्ण खर्च वहन करना।
12.	योजना में किसी प्रकार का परिर्वतन,संशोधन/निरसन का अधिकार अकादमी का होगा।
13.	प्रकाशन सहयोग राशि 20 से 30 हजार रू. प्रति पुस्तक दी जा सकेगी।